अंकेक्षण की प्रविधियां

डा0 नजाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर–वाणिज्य
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्य के लिये है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी ओर के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगें ओर इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिये ही करेंगें। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

प्रत्येक लेन देन की सत्यता व पूर्णता प्रमाणित करना एक परम्परागत प्रविधि का भाग है। सत्यता व पूर्णता प्रमाणित करने के लिए कुछ अंकेक्षण प्रविधियां निम्न हो सकती है।

1. भौतिक सत्यापनः– भौतिक सत्यापन के द्वारा स्वयं के निरीक्षण से लेखा पुस्तकों में लिखी गयी मदों की जांच की जा सकती है। किसी मद की विद्यमानता प्रमाणित करने के लिये भौतिक सत्यापन किया जा सकता है। ऐसा करने के लिये अंकेक्षक को किसी अधिकारी के प्रमाण पत्रों का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं होती।

2. भौतिक गणनाः– भौतिक गणना एक सरल उपाय है, बशर्ते कोई मद स्पष्ट रूप से गिने जाने के योग्य हो। गणना उन्हीं मदों की हो सकती है जिनकी पहचान व एकरूपता स्पष्ट व सरल हो।

3. परीक्षण जांचः— परीक्षण जांच के अन्तर्गत विभिन्न मदों में से कुछ मदों का चयन कर उसकी जांच की जाती है और यदि जांच की गई मद या मदें सही पायी जाती है। तो यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि अन्य मदें भी सही होंगी।

4. नैत्यक जांचः— नैत्यक जांच में वह जांच सम्मिलित है जो संस्थाओं में सामान्य रूप से रखी जाने वाली पुस्तकों तथा लेखों से सम्बन्धित है। जांच सामान्य है और साधारण योग्यता वाले व्यक्ति भी इसको कर सकते है। नैत्यक जांच से कपट व त्रुटियों का आसानी से पता चल सकता है। यह जांच प्रारम्भ से अन्त तक किये गये लेखें की की जा सकती है।

5. मूल प्रपत्रों और संलेखें की जांचः– व्यवसाय के लेन देनों के सत्यापन के लिए अंकेक्षक को विभिन्न संलेखें तथा प्रसंविदों की जांच करनी होती है। अतः संलेखों व प्रसंविदों की जांच अंकेक्षण की अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रविधि है क्योंकि अधिकांशतः लेन देन संलेखों से सम्बन्धित होते है।

6. पूछताछः– अंकेक्षक को पुस्तकों में किये गये लेखों के लिए उचित साक्ष्य एकत्रित करने होते है। तथा साक्ष्यों की अधिकारपूर्णता संगठन में प्रचलित आन्तरिक नियन्त्रण व आन्तरिक निरीक्षण की पद्वति पर निर्भर करती है। अतः पूछताछ के माध्यम से अंकेक्षक यह कार्यवाही सुनिश्चित कर सकता है।

7. प्रमाणनः— प्रमाणन की प्रविधि से अंकेक्षक प्रविष्टियों के आधारभूत प्रमाणकों की जांच करता है। यह सत्यापन करना होता है कि कोई भी प्रमाणक ऐसा न हो जिसके लिए प्रविष्टि न की गयी हो और ऐसी कोई भी प्रविष्टि न हो जिसका प्रमाणका मौजूद न हो।

8. गहन जांचः— गहन जांच में अंकेक्षक को प्रत्येक लेन देन के सम्बन्ध में प्रारम्भ से अन्त तक उसके प्रत्येक पहलू पर ध्यान देना होता है। लेन देन व्यवसाय के हित में किया गया है और उसका लेखा आवश्यक पुस्तक में किया गया है जो पूर्णरूपेण सही है, यह सब देखना गहन जांच के अर्न्तगत आता है।

9. सम्बन्धित सूचना से मद का सहसम्बन्ध स्थापित करनाः– विभिन्न लेखा प्रविष्टियों के सम्बन्ध में व्यवसाय की वित्तीय स्थिति के रूझान को समझने के लिए इसकी निरन्तरता की जांच करनी चाहिए। इस प्रकार के विश्लेषण विभिन्न मामलों की अनियमितताएं प्रकाश में आ जाती हैं।

10. सम्पुष्टीकरणः– किसी लेन देन की शुद्वता, सक्षमता तथा सही होने की जानकारी के उद्देश्य के लिए अंकेक्षक को उचित अधिकारियों से सम्पूष्टता प्रमाणपत्र एकत्रित करने होते हैं। आवश्यकता होने पर अंकेक्षक बाहरी व्यक्तियों से पत्र व्यवहार कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः—

1. अंकेक्षण, टी0आर0 शर्मा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।